वर्तमान हिन्दी व्यंग्य

[नई कविता के संदर्भ में]

*डॉ. श्रीमती कृष्णा चटर्जी

शोधपत्र-हिन्दी

व्यंग्य अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है वह अपनी वक्रता में कई अर्थ समेट कर चलता है यह क्रोध की अभिव्यक्ति का एक साधन भी है। व्यंग्यकार, व्यंग्यपात्र एवं आस्वादक इन तीनों का सक्रिय योग व्यंग्य की पूर्णता के लिए अपेक्षित है। आलम्बन के प्रति तिरस्कार, उपेक्षा या भर्त्सना की भावना लेकर बढ़ने वाला हास्य व्यंग्य कहलाता है। व्यंग्यकार जीवन में व्याप्त दुर्बलताओं का विनाश करके सद्भावनाओं की स्थापना का प्रयास करता है। व्यंग्य एक चुभता काँटा है जो परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए आयुध का काम करता है। इसकी प्रयोजनशीलता ही इसे हास्य से पृथक करती है। 'उसका लक्ष्य प्रायः मानवीय दुबलताओं पर कटाक्ष करके उन्हें उभारना और सुधारना होता है। किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति अरुचि प्रकट करने के और भी ढंग हो सकते हैं, परंतु व्यंग्य का स्वर और पद्धति सर्वथा भिन्न होती है '। व्यंग्य का उद्देश्य सुधार है।

इसकी जीवनगत उपयोगिता परिष्कार है व्यंग्य की आँखे अनाचार को नहीं देख सकती और न इसकी जीभ ही मौन रह सकती है। अपने स्वभावगत आक्रोश, ग्राम्भीर्य और परिवर्तन कर डालने की क्षमता के सहारे व्यंग्य सामाजिक जर्जर-कलुषित आचरणों पर आघात करता है। इसमें नैतिकता का आभाव होता है। दया, करुणा तथा उदारता के लिए इसमें गुंजाइश नहीं होती। व्यंग्यकार का अहं जितना आहत होगा सामाजिक विसंगतियों पर वह उतनी ही तीखी चोट करेगा। व्यंग्य कहीं-कहीं कुनैन से भी कड़वी दवा बनकर समाने आता है और इसी कारण इसका प्रभाव भी मर्म स्पर्शी एवं परिवर्तनकारी होता है। बहुधा मन के आक्रोश के उफान में स्थिति की विसंगति पर हमारा ध्यान नहीं जाता लेकिन जब आक्रोश की संयमपूर्ण अभिव्यक्ति द्वारा उक्त विसंगति की ओर कोई संकेत करता है तब परिवेशगत कुरीतियाँ साकार हो जाता हीं। हरिशंकर परसाई ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है - 'मैं सुधार के लिए नहीं बदलने के लिए लिखना चाहता हूं। याने कोशिश करता हूँ। चेतना में हलचल हो जाय, कोई विसंगति नजर के सामने आ जाय इतना काफी है।' व्यंग्य के जरिए जनजीवन में जागरण लाने का कार्य जीवन के साक्षात्कार के बिना असंभव है। अतः व्यंग्यकार को जीवनगत सत्य के सर्वदा निकट रहना पड़ता है। कटु-मधु अनुभवों के सहारे व्यंग्यकार की संवेदना जगती है और व्यंग्य की सर्जना की होती है। व्यंग्यकार एक साथ विविध मनः स्थितियों एवं परिवेशगत अवस्थाओं से गुजर कर आदर्श और यथार्थ का स्पर्श करता है। विसंगतिपूर्ण जीवनगत परिस्थितियाँ ही व्यंग्य का प्रकट करती है जो सीधे चेतना पर प्रहार करती है। विवेकशील व्यक्ति के समाने व्यंग्य का सहारा लेने के सिवा और कोई विकल्प नहीं रह जाता। केशवचंद्र वर्मा ने इस संदर्भ में ठीक ही लिखा है - 'सामाजिक विद्रूपताओं के प्रति यदि काई प्रतिक्रिया व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त न की जा सकी, तो शायद यही विकल्प रह जाएगा कि व्यक्ति एंग्रीमैन होकर जेल खाने और पागल खाने के बीच घूमता रह जाएगा।' सच है व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों मिथ्याचारों और पाखण्डों का पर्दाफाश करता है। आँख में उँगली डालकर दिखाने का काम व्यंग्य ही कर पाता है। संयमपूर्ण क्षोम की अभिव्यक्ति ही व्यंग्य है। व्यंग्यकार मानवीय मूल्यों का विचारक होता है।'

युगीन बदले परिवेश में एक स्वतंत्र गद्य विद्या के रूप में व्यंग्य को मान्यता मिल चुकी है। सभी व्यंग्यकारों ने मनुष्य, संस्कृति और मूल्यों द्वारा युगीन व्यवस्था एवं समकालीन राजनीति पर प्रहार किया है। सच्चे व्यंग्य की यह खासियत होती है कि वह मूल्यों की आपाधापी और संक्रांति की चित्र ही नहीं देता बल्कि नये मूल्यों की तलाश की छटपटाहट भी उसमें होती है। वह महज नकारात्मक या चिढ़ाने वाली योजना नहीं वरन् क्रांतिकारी निर्माण चेतना से संपन्न लेखन है। व्यंग्यकार समाज का निन्दक और दोष दिखाने वाला ही नहीं उसकी सुधारक भी होता है। सार्थक व्यंग्य केवल मन का एक भाव ही नहीं है वह जीवन का एक बौद्धिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी होता है। वह जिन्दगी और मूल्यों की यथार्थवादी पहचान होता है। वह प्रहार करता है, दया की भीख नहीं माँगता। वह क्रांति चाहता है, महज सुधार नहीं। दुःख जहाँ सामान्य जनों को तोड़ता है, वहीं विशेष चेतना संपन्न लोगों का परिमार्जन करता है। समस्त पाश्चात्य और पौर्वात्य समीक्षकों-लेखकों के मन्तव्यों पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि व्यंग्य का जन्म हमारे चारों और व्याप्त विकृतियों से होता है, जो निरंतर व्यक्ति को कचोटती रहती हैं। इन विकृतियों एवं विसंगितयों का विरोध करना ही व्यंग्य का लक्ष्य है। जीवन की समस्त विकृतियों, विरूपताओं और नकारात्मक, निन्दनीय व उपहासास्पद अवस्थाओं का कलात्मक निषेध एवं सोद्देश्य खंडन ही व्यंग्य है। इस प्रकार निषेधात्मक होते हुए भी व्यंग्य का स्वरूप सृजनात्मक होता है। इसके मूल में सड़ी-गली मान्यताओं और रूढ़ियों के सुधार तथा नव-निर्माण की कामना निहित होती है। अपने इस स्वरूप के कारण व्यंग्य की सबसे बड़ी उपादेयता उसकी सामाजिक परिष्कार की क्षमता है। व्यंग्य की यह कलात्मकता, सोद्देश्यता तथा आक्रामकता उसे उपदेश, हास्य, उपहास, वक्रोक्ति आदि समान प्रतीत होने वाली प्रवृत्तियों से अलग कर देती है। व्यंग्यकार का महत्तव सामाजिक प्रहरी एवं दिशा निर्देशक से भी आगे एक क्रांतिकारी के रूप में होता है। उसकी शक्ति से दुश्मन हताश, मित्र गौरवान्वित एवं

* सहायक प्राध्यापक, हिन्दी शास. वि. या. ता. स्नात. स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

जनसाधारणा प्रसन्नता एवं सुख का अनुभव करता है। इसलिए उसकी विजय उसकी न होकर समस्त समाज की होती है। हिन्दी काव्य-जगत में व्यंग्यपरक कविता की परम्परा बहुत पुरानी हैं। सूरदास के भ्रमरगीत को श्रेष्ठ व्यंग्य काव्य माना जा सकता है जिसमें गोपियों और उद्धव का भ्रमर के माध्यम से संवाद है लेकिन आधुनिक काव्य में निराला जी के काव्य में यह अतिशय मुखर है। उनकी कुकुरमुत्ता रचना में इसे स्पष्ट देखा जा सकता है-

1. "अबे सुन बे गुलाब 2. भूल मत गर पाई खुशुबू, रंगों आब" 3. खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट 4. डाल पे इठला रहा कैपिटलिस्ट। अभिधेयात्मक व्यंग्य भी नई कविता में दृष्टिगत होते हैं फिर भी वे दोहरी मार करने से नहीं चूकते। नरेश मेहता के अनुसार- "जिस समाज में मानव-मन बीमार और कुण्ठित नहीं, खोखला भी है, उस समाज में रचित काव्य में व्यंग्यात्मकता का आ जाना स्वाभाविक ही है। क्योंकि राजनीति जिस स्वस्थ समाज की बात करती है, काव्य उस स्वास्थ्य में खोखले व्यक्तित्व वाले मानव-मन का ही दर्शन कर पाता है। सामाजिक विश्वास और वास्तविकता, नेताओं की कथनी और करनी के बीच जो अंतर दिखाई देता है वह भी कवि को व्यंग्यात्मक शैली अपनाने के लिए विवश करता है।"

नई कविता के जिन प्रमुख कवियों ने अपनी रचनाओं में व्यंग्य को स्थान दिया है उनमें अज्ञेय, भवानी प्रसाद मिश्र, डॉ. रामविलास शर्मा, भारत भूषण अग्रवाल और धूमिल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अज्ञेय ने बहुत अधिक व्यंग्यपरक कविताएँ लिखीं हैं उनकी "इंद्रधनुष रौंदे हुए थे" में संकलित कविताएं व्यंग्यात्मक हैं। 'साँप' शीर्षक कविता में उनके व्यंग्य का पैनापन देखते ही बनता है-साँप/तुम सभ्य तो हुए नहीं /नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया एक बात पूछूँ (उत्तर दोगे ?) तब कैसे सीखा डँसना/विष कहाँ पाया। नई कविता; एक संभाव्य भूमिका, 'विपर्यय' आदि शीर्षक कविताओं में गहरा व्यंग्य बोध है जो पैना और तीखा है। 'शोषक भैया' (बावरा अहेरी) 'हरा भरा है देश', 'अरी ओ करूणा प्रभामय', 'बांगर और खादर' आदि उनके प्रसिद्ध व्यंग्य गीत है।"भवानी प्रसाद मिश्र ने भी अपनी "गीत फरोश" शीर्षक किवता में हल्की मूड माइण्ड की कविता लिखने वाले और उसे चटकारे के साथ बेचने वाले के प्रति बड़ा तीखा व्यंग्य किया है। "

उदाहरण दृष्टव्य है-"जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ,/मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ,/मैं सभी किसिम के गीत बेचता हूँ।"

डॉ. रामविलास शर्मा, एवं शकुन्तला माथुर की कविताएँ भी नया व्यंग्यबोध लेकर उभरी हैं। केदारनाथ अग्रवाल ने तो रूढ़ियों और परम्पराओं के खण्डन तथा समाज में जागृति लाने के उद्देश्य से अपनी कविता में चुभते व्यंग्यों का प्रयोग किया है। उनकी 'देवमूर्ति' शीर्षक कविता में अंधविश्वास के प्रति तीखा व्यंग्य है-"छोटे सी देवमूर्ति/आले में रखी थी/बेचारी औचक ही/ चूहे के धक्के से/दाँसा के पत्थर पर/नीचे गिर टूट गई/ताज्जुब है मुझको तो/करूणा के सागर के/अंतर की एक बूँद/भूम पर न छलकी।" केदारनाथ अग्रवाल की 'युग की गंगा', 'फूल नहीं रंग बोलते हैं,' आदि काव्य संग्रहों की अनेक कविताएं व्यंग्यपूर्ण शैली में लिखी गई है। "भारतभूषण अग्रवाल ने भी जीवन के यथार्थ को तीक्ष्ण व्यंग्य द्वारा उभारने की चेष्टा की हैं। 'टूटे सपनों का सपना' नामक रचना आधुनिक युग में कला के 'वाणिज्यीकरण' पर करारी चोट करती है।" "कल रात मैंने स्वप्न देखा/मैंने देखा कि मेनका अस्पताल में नर्स हो गई और विश्वामित्र/ट्यूशन पढ़ा रहे है /उर्वशी ने डांस स्कूल खोल लिया है /नारद गिटार सिखा रहे हैं।/गणेश बिस्कुट खा रहे हैं वृहस्पति अंग्रेजी से अनुवाद कर रहे हैं।" मदन वात्स्यायन और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने भी वर्तमान व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया है। "आज की कविता में सामाजिकार्थिक विसंगतियों को व्यंग्य से बेधने की चेष्टा है। अतः आज नई कविता की भंगिमा वक्र होती जा रही है। सर्वेश्वर ने वर्तमान व्यवस्था की विसंगतियों पर जो चोट की है वह तीखे और चुभते व्यंग्य का स्वरूप लिए है।" आठवें दशक की कविताओं में भी हमें गहरे व्यंग्य बोध के दर्शन होते हैं। दुष्यंत कुमार, धूमिल, लीलाधर जगुड़ी, ज्ञानेन्द्रपति आदि कवियों ने व्यवस्था के हितों से जुड़े हुए रचनाकारों और बुद्धिजीवियों के छदम् चेहरे को बेनकाब करना की कोशिश की है। दुष्यंत कुमार की रचना में यह दृष्टव्य है-"मैं बेपनाह अंधेरों को सुबह कैसे कहूँ,/मैं इन नजारों का, अंधा तमाशबीन नहीं।/तेरी जुबान है झूठी, जम्हूरियत की तरह,/तू एक जलील ,सी गाली से बेहतरीन नहीं।/ तू इस मशीन का पुर्जा है, तू मशीन नहीं।" इसके अलावा-धूमिल के और ज्ञानेन्द्रपति के योगदान को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता धूमिल का रचना संसार आज का कटु यथार्थ है। प्रजातंत्र और पूंजीपतियों के प्रति उनका व्यंग्य कितना सटीक है-

"वह कौन सा प्रजातांत्रिक नुस्खा है/ कि जिस उम्र में,/ मेरी मां का चेहरा/ झुर्रियों की झोली बन गया है / उसी उम्र की मेरे पड़ोस की महिला के चेहरे पर/ मेरी प्रेमिका के चेहरे सा लोच है।" इस प्रकार नये कवियों की व्यंग्य प्रियता ने कविता को सशक्त और समृद्ध किया है और एक रचनात्मक दृष्टि दी है। वैसे तो पहले भी जिक्र किया जा चुका है कि हिन्दी में व्यंग्य लेखन की परम्परा बहुत पुरानी है लेकिन 'नई कविता में यह अपने चरमोत्कर्ष पर है।'

निष्कर्ष :आज व्यंग्य लेखन एक जरूरी माध्यम के रूप में उभरा है और रचनात्मक-संवेदनात्मक स्तर पर उसका बहुआयामी विस्तार हुआ है। व्यंग्य के प्रहारक अन्दाज के साथ ही साथ शिल्प के नए-नए क्षितिजों का स्पर्श करने की ललक भी व्यंग्यकारों में है। निश्चय ही हिंदी व्यंग्य लेखन हथियार और जादू की छड़ी के रूप में एक साथ विकसित हुआ है। तभी एक ओर जहाँ व्यंग्य की प्रहारक-परिवर्तनोंन्मुख छवि निखरी है, तो दूसरी ओर उसमें सम्प्रेषण के नव्यतर साधनों का विकास भी हुआ है। व्यंग्य की लोकप्रियता आज अपने चरम पर है। आज कोई पत्र-पत्रिका ऐसी नहीं जिसमें व्यंग्य के नियमित कॉलम न हों। उत्कृष्ट व्यंग्य लेखन के साथ-साथ भर्ती का व्यंग्य-लेखन भी आज बहुतायत से जारी है। व्यंग्य के नाम पर फूहड़ और दिग्भ्रमित करने वाला हास्य भी कम नहीं परोसा जा रहा है व्यंग्य चूंकि एक हथियार है, अतः उसका विवेकसंगत प्रयोग नितान्त आवश्यक है। हर किसी पर इस अस्त्र का प्रयोग किया जाना अपेक्षित नहीं है। इसे किसी के पक्ष में प्रयुक्त करना है तो किसी के विरूद्ध। यह विवेक विचारधारा से प्राप्त होता है। विचार धारा जिसके केंद्र में मनुष्य हो और जिसका लक्ष्य मानवता का कल्याण हो। इस विचार धारा से दिशा प्राप्त कर मानवता के हित में व्यंग्य का उत्तरोत्तर उत्कर्ष सुनिश्चित करना आज व्यंग्यकारों का सबसे बड़ा कर्त्तव्य भी है और उनके समक्ष गंभीरतम चुनौती भी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. चतुर्वेदी बरसानेलाल :हिन्दी साहित्य में हास्य रस 2. डॉ.नागेन्द्र : मानविकी पारिभाषिक कोश 3.परसाई हरिशंकर :सदाचार की ताबीज 4. धर्मयुग : 6 मार्च 1969 5. सुरेश कान्त : हिन्दी गद्य लेखन में व्यंग्य और विचार 6. तिवारी बालेन्दुशेखर :हिन्दी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य 7. मेहता नरेश: कृति : काव्य विशेषांक 8. अरूण कुमार: नई कविता: कथ्य एवं विमर्श 9.अग्रवाल केदारनाथ:युग की गंगा